

१. मातृभूमि

- मैथिलीशरण गुप्त

परिचय

जन्म : १८८६, झाँसी (उ.प्र.)

मृत्यु : १९६४

परिचय : मैथिलीशरण गुप्त जी खड़ी बोली साहित्य में मील के पत्थर माने जाते हैं। आपकी रचनाओं में राष्ट्रीयता, भारत के गौरवशाली इतिहास और संस्कृति के दर्शन होते हैं। आपने अपनी कृतियों में इतिहास की उपेक्षित नारी पात्रों का गौरव बढ़ाया है।

प्रमुख कृतियाँ : 'साकेत' (महाकाव्य), 'यशोधरा', 'जयद्रथ वध', 'पंचवटी', 'भारत-भारती' (खंडकाव्य), 'रंग में भंग', 'राजा-प्रजा' (नाटक) आदि।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत कविता में मैथिलीशरण गुप्त जी ने हम सबकी मातृभूमि भारतमाता का गौरवगान किया है। यहाँ आपने भारतभूमि की हरीतिमा, नदी-सागर, फल-फूल, चाँदनी-प्रकाश आदि का सुंदर वर्णन किया है। साथ ही जन्मभूमि की विशेषताओं को भी दर्शाया है।



नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है,
सूर्य-चंद्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडल हैं,
बंदीजन खग वृंद, शेष फन सिंहासन है।

करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस देश की।
हे मातृभूमि, तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की ॥

निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,
शीतल-मंद-सुगंध पवन हर लेता श्रम है।
षड्रत्नतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है,
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है।

शुचि सुधा सींचता रात में, तुझपर चंद्र प्रकाश है।
हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है ॥

सुरभित, सुंदर, सुखद सुमन तुझपर खिलते हैं,
भाँति-भाँति के सरस, सुधोपन फल मिलते हैं।
औषधियाँ हैं प्राप्त एक-से-एक निराली,
खानें शोभित कहीं धातु वर रत्नोंवाली।

जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं।
हे मातृभूमि वसुधा-धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं ॥

क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है,
सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है।
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुखहर्ती है,
भयनिवारिणी, शांतिकारिणी, सुखकर्ती है।

हे शरणदायिनी देवी तू, करती सबका त्राण है।
हे मातृभूमि संतान हम, तू जननी, तू प्राण है ॥

शब्द संसार

पयोद पुं.सं.(सं.) = बादल, मेघ

नीर पुं.सं.(सं.) = पानी, जल

शुचि वि.(सं.) = पवित्र, शुद्ध

सुधा स्त्री.सं.(सं.) = अमृत, जल

तम पुं.सं.(सं.) = अंधकार, अँधेरा

परिधान पुं.सं.(सं.) = वस्त्र, कपड़ा

सुरभित वि.(सं.) = सुगंधित, सौरभित

विभव पुं.सं.(सं.) = संपन्नता, बहुतायत

स्वाध्याय

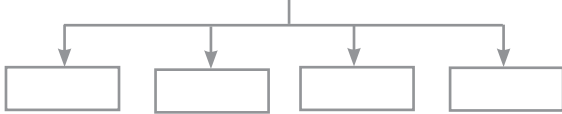
* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

१. फूलों की विशेषताएँ

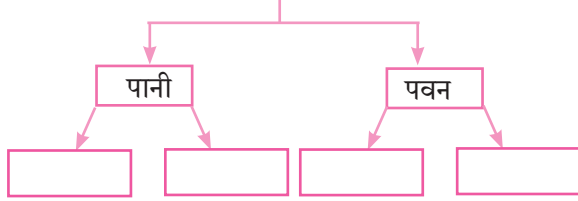


२. जन्मभूमि की विशेषताएँ



(३) कृति पूर्ण कीजिए :

विशेषताएँ



(५) एक शब्द के लिए शब्द समूह लिखिए :

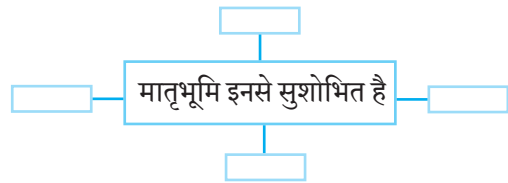
* विश्वपालिनी = -----

* भयनिवारिणी = -----

(२) इन शब्द-शब्द समूहों के लिए कविता में प्रयुक्त शब्द लिखिए :

शब्द/शब्द समूह	शब्द
पक्षियों के समूह	-----
शेषनाग के फन	-----
समुद्र	-----
सूरज और चाँद	-----

(४) संजाल पूर्ण कीजिए :



(६) चौखट में प्रयुक्त शब्दों को सूचना के अनुसार परिवर्तन करके लिखिए :

	विलोम शब्द	शब्द	पर्यायवाची शब्द
१.	_____	सत्य	_____
२.	_____	शीतल	_____
३.	_____	रात	_____
४.	_____	निर्मल	_____

(६) 'हे शरणदायिनी देवी तू, करती सबका त्राण है' पंक्ति से प्रकट होने वाला भाव लिखिए ।



'मैं पंछी बोल रहा हूँ ...' विषय पर निबंध लिखिए ।

